कक्षा : प्रथम – जैन धर्म परिचय (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) हमारे गुरु हैं-

(क) अरिहंत (ख) सिद्ध

(ग) आचार्य, उपाध्याय, साधु (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(b) सामायिक में मन के दोष हैं -

(क) 10 (ख) 12

(ग) 32 (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(c) सामायिक में त्याग किया जाता है -

(क) निरवद्य योग का (ख) सावद्य योग का

(ग) सावद्य, निरवद्य योग का (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(d) जिस अक्षर पर अनुस्वार (.) है, उसके आगे 'व' होने पर अनुस्वार का उच्चारण करेंगे-

(क) ञ् (ख) ण्

(ग) म् (घ) ड्. (ग)

(e) आठवाँ बोल है-

(क) योग पन्द्रह (ख) कर्म आठ

(ग) शरीर पाँच (घ) मिथ्यात्व दस (क)

(f) स्पशनेन्द्रिय के विषय हैं-

(क) 05 (ख) 23

(ग) 08 (घ) 03 (ग)

(g) साहरण की रात्रि में माता त्रिशला ने स्वप्न देखे-

(क) 10 (ख) 14

(ग) 07 (घ) 09 (ख)

(h) 'महावीर स्तुति' प्रार्थना के रचयिता है -

(क) अशोक मुनि (ख) दर्शन मुनि

(ग) गौतम मुनि (घ) महेन्द्र मुनि (ख)

(i) ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम है-

(क) वासुपूज्यजी (ख) अनन्तनाथजी

(ग) श्रेयांसनाथजी (घ) शीतलनाथजी (ग)

(j) विनय जिसका मूल है, वह है -

(क) गुरु कृपा (ख)धर्म

(ग) ज्ञान (घ) मान (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) घाती कर्मों को क्षय कर अरिहंत बन सकते हैं। (हाँ)

(b) प्राकृत भाषा में ऋ अक्षर होता है। (नहीं)

(c) इच्छाकारेणं का पाठ आलोचना सूत्र है। (हाँ)

(d) अनुस्वार के आगे'स' होने पर अनुस्वार (.) का उच्चारण 'न' करेंगे। (हा)

(e) पाँचवा बोल प्राण दस होता है। (नहीं)

(f) मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (हाँ)

(g) माता-पिता के स्वर्गवास के समय महावीर की आयु 30 वर्ष थी। (नहीं)

(h) श्री शांतिनाथजी 14वें तीर्थंकर थे। (नहीं)

(i) गुरु भगवंतों के समक्ष खुले मुहँ नहीं बोलना उत्तरासंग धारण है। (हाँ)

(j) व्यसन जीवन के सर्वनाशक हैं। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मेरे द्वारा चतुर्विध संघ रूप धर्म तीर्थ की स्थापना की गई। तीर्थंकर

(b) मैं सामायिक ग्रहण करने का पाठ हूँ। करेमि भंते/सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र

(c) मैं कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा का पाठ हूँ। आत्मशुद्धि का पाठ/उत्तरीकरण सूत्र/ तस्स उत्तरी का पाठ

(d) मैं सभी मंगलों में पहला मंगल हूँ। नवकार मंत्र

(e) मैं पच्चीस बोल का तेरहवां बोल हूँ। मिथ्यात्व के दस भेद

(f) मैने भगवान महावीर का अभिग्रह पूरा किया। चन्दनबाला

(g) मैं पाप को मिटाने तथा भारत देश को जगाने आया था। भगवान महावीर

(h) मैं 21वाँ तीर्थंकर हूँ। नमिनाथजी

(i) मैं पाँच अभिगम में पहला अभिगम हूँ। सचित्त का त्याग

(j) मैं एक ऐसा कुव्यसन हूँ जो मानव जीवन का भयंकर कोढ़ के रूप में जाना जाता हूँ। वैश्यागमन

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2 = (28)

(a) **अणगार धर्म कसे कहते हैं ?**

उ- **पाँच महाव्रतों के पालन रूप सर्वविरति चारित्र को अणगार धर्म कहते हैं।**

(b) **उच्चारण शुद्धि के कोई दो नियम लिखिए।**

उ- **दीर्घ स्वर व दीर्घ स्वर की मात्रा वाले अक्षरों का उच्चारण में जोर देकर बोला जावे व ह्रस्व स्वर व ह्रस्व मात्रा वाले अक्षरों को बिना जोर दिये बोला जावे। इक्षु- ईख। उष्ट्र-ऊँट। पिटना-पीटना। कुल-कूल। किला-कीला। किट-कीट।**

शब्द के प्रारम्भ में आधा अक्षर आवे तो उसके पहले वाले अक्षर पर जोर दिया जावे। जैसे स्तवन में 'त' पर।

शब्द के बीच में आधा अक्षर आवे तो उसके पहले वाले अक्षर पर जोर देकर बोला जावे। जैसे - कल्प में 'क' पर जोर देकर बोलें। उज्जोयगरे में उज्‌ जोयगरे 'उ' पर जोर देना चाहिए।

(c) **भगवान महावीर ने कौनसे धर्म की प्ररूपणा की ?**

उ- **अणगार धर्म एवं अगार धर्म की।**

(d) **जैन धर्म का प्राण किसे कहा गया है ?**

उ- **अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह, समता एवं वीतरागता को।**

(e) **सामायिक में कितने प्रकार के दोष लगते हैं ?**

उ- **दस मन के, दस वचन के, 12 काया के। इस प्रकार 32 दोष लगते हैं।**

(f) **सामायिक ग्रहण करने का पाठ लिखिए।**

उ- करेमि भंते!
सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि।
जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं
ण करेमि, ण कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि,
गरिहामि, अप्पाणं वोसिराम।

(g) **पाँच जाति के नाम लिखिए।**

उ- **एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय,पंचेन्द्रिय**

(h) **नौवें बोल के आधार पर पाँच ज्ञान के नाम लिखिए।**

उ- **1. मतिज्ञान 2. श्रुतज्ञान 3.अवधिज्ञान 4.मनःपर्याय ज्ञान 5.केवलज्ञान।**

(i) **चक्षुरिन्द्रिय के पाँच विषयों के नाम लिखिए।**

उ- **काला, नीला, लाल, पीला, सफेद।**

(j) **केवल ज्ञान प्राप्त होने पर भगवान महावीर की पहली शिष्या कौन बनी ?**

उ- **चन्दनबाला**

(k) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- 'अरिहंताणं' पद पहला है, अरि आरति दूर भगाता है।

सिद्धाणं सुमिरण करने से, मनवांछित सिद्धि पाता है।

(l) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- जिस जगती का उद्धार किया, जो आया शरण उसे पार किया।

(m) **ज्ञान विनय किसे कहते हैं ?**

उ- ज्ञान विनय- श्रद्धापूर्वक जैनागमों का स्वाध्याय एवं चिंतन-मनन करना 'ज्ञान विनय' है।

(n) **मांस भक्षण से क्या हानि होती हैं ?**

उ- मस भक्षण- यह निर्दयता व पशुता की सबसे बड़ी निशानी है। मांस, मछली, अण्डे आदि मांसाहारी पदार्थों का सेवन करना 'मांस भक्षण' है। मनुष्य जीभ के स्वाद के लिए बेचारे मूक व निरीह प्राणियों की हत्या करके मांस का सेवन करता है। सभी को अपने प्राण प्यारे होते हैं। प्राणियों की हत्या करना महापाप है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **हम अरिहन्तों को आराध्यदेव क्यों मानते हैं ?**

उ- हमारा लक्ष्य अनंत सुख को प्राप्त करना है, अतः हमारा आर्दश भी अनंत सुखों में लीन परमात्मा होना चाहिये। अरिहंत भगवान् अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त बलवीर्य के धारक होते हैं। इसलिए हम अरिहन्तों को आराध्य देव मानते हैं।

(b) **गुरु किसे कहते हैं, गुरु हमें क्या देते हैं ?**

उ- मानव -मन में रहे हुए अज्ञान अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले महापुरुष को गुरु कहते हैं।

(c) **जैन साधुओं द्वारा पालन करने योग्य प्रथम तीन महाव्रतों को समझाइए।**

उ- 1. अंहिसा- मन, वचन एवं शरीर से छोटे या बड़े, त्रस या स्थावर किसी भी प्रकार के जीव की हिंसा न करना, न करवाना, तथा न करने वाले का समर्थन करना।
2. सत्य-मन, वचन व काया से न झूठ बोलना, न बुलवाना, न बोलने वाले का समर्थन करना।
3. अचौर्य- मन, वचन एवं शरीर से न चोरी करना, न करवाना न करने वालों का समर्थन करना।

(d) **श्रद्धा एवं पालन करने की अपेक्षा से जैन कितने प्रकार के होते हैं ?**

उ- जैन तीन प्रकार के होते हैं- 1. जिन वचनों पर श्रद्धा रखने वाले। 2.श्रद्धा के साथ आंशिक नियमों का पालन करने वाले। 3.श्रद्धा के साथ पूर्ण चारित्र का पालन करने वाले।

(e) **विहरमान किसे कहते हैं, ये वर्तमान में कितने हैं ?**

उ- जो अरिहंत भगवान तीर्थंकर के रूप में महाविदेह क्षेत्र में विचरण करते हैं वे विरहमान कहलाते हैं। ये वर्तमान में 20 हैं जो श्री सीमन्धरस्वामीजी, युगमन्धरस्वामीजी आदि के नाम से जाने जाते हैं।

(f) **इरियावहियं .....संताणा संकमणे। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि

पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे,

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,

ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे।

(g) **अप्पडिहय.....जिअभयाणं। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं,

तिण्णाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं,सव्वण्णूणं

सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति

सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपताणं णमो जिणाणं जिअभयाणं।

(h) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।

आरूग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा

सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

(I) **पन्द्रह योगों के नाम लिखिए।**

उ- आठवें बोले योग पन्द्रह- (चार मन के)1 सत्य मनोयोग, 2 असत्य मनोयोग, 3 मिश्र मनोयोग, 4 व्यवहार मनोयोग। (चार वचन के) 5.सत्य भाषा, 6 असत्य भाषा, 7 मिश्र भाषा, 8 व्यवहार भाषा।

(सात काया के) 9 औदारिक, 10 औदारिक मिश्र, 11 वैक्रिय, 12 वैक्रिय मिश्र, 13 आहारक, 14 आहारक मिश्र और 15 कार्मण काय योग

(j) **दस प्राण के नाम लिखिए।**

उ- 1 श्रोत्रेन्द्रिय-बलप्राण, 2 चक्षुरिन्द्रिय -बलप्राण, 3 घ्राणेन्द्रिय -बलप्राण, 4 रसनेन्द्रिय -बलप्राण, 5स्पर्शनेन्द्रिय -बलप्राण, 6 मनोबलप्राण, 7 वचन--बलप्राण, 8 काय -बलप्राण,9 श्वासोच्छ्वास-बलप्राण, 10 आयुष्य-बलप्राण।

(k) **स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय के 96 विकार लिखिए।**

उ- स्पर्शनेन्द्रिय के आठ विषय के 96 विकार- खुरदरा(ककर्श), कोमल (मधु), हल्का (लघु), भारी (गुरु),ठण्डा (शीत), गर्म (उष्ण), लुखा (रूक्ष)और चिकना (स्कन्ध)। ये 8 सचित्त, 8 अचित्त, 8 मिश्र, ये 24 शुभ और अशुभ, इन 48 पर राग और 48 पर द्वेष। इस प्रकार 96 विकार।

(l) **पंच दिव्य के नाम लिखिए।**

उ- पंच दिव्य- 1 स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा, 2 पाँच रंग के अचित्त पुष्प, 3 दिव्य वस्त्र, 4 देवदुन्दुभियों का बजना, 5 आकाश में 'अहो दान' की घोषणा।

(m) **नित .....नैया तारी है। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

उ- नित नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती।

'अशोक मुनि' जय विजय मिले, शांति प्रसन्नता बढ़ जाती।।

सम्मान मिले सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है।

(n) **मदिरा पान से होने वाली हानियाँ लिखिए।**

उ- मदिरापान-शराब मानव को मदहोश कर देती है। इसके पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है। अपने पराये का भान नहीं रहता। वाणी पर संयम नहीं रहता, धन नष्ट हो जाता है। शराब मानव को पशु जैसा बना देती है। जिसे इसकी एक बार आदत पड़ जाती है वह आसानी से छूटती नहीं है। इसकों पीने से घर के घर बरबाद हो जाते हैं। घर स्वर्ग की जगह शमशान बन जाते हैं, एक-एक दाने के लिए बच्चे तरस जाते हैं। शराब पीने से व्यक्ति को कई बीमारियाँ लग जाती हैं। गुर्दे खराब हो जाते हैं, पेट में फोड़े व जख्म बन जाते हैं। कभी-कभी तो हार्ट फेल भी हो जाता है।